॥ श्रीमद्भगवद्गीता शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका - स्तर 2 ॥

वर्णस्थान और उनके उच्चारण -

- संस्कृत भाषा में वर्णों के उच्चारणों के स्थान अतीव विचारपूर्वक निश्चित किये गये हैं। किसी भी वर्ण के उच्चारण के लिये मुख के विशिष्ट स्थानों का उपयोग किया जाता है। उदा. कण्ठ, तालु, मूर्धा इत्यादि। जिस स्थान से वर्ण का उच्चार किया जाता है उसी स्थान के नाम से वह वर्ण भी पहचाना जाता है, जैसे कण्ठ से उच्चारित होने से 'क' वर्ग का प्रत्येक वर्ण "कण्ठ्य" कहा जायेगा। ये वर्ण तथा इनके स्थान निम्न चित्र में दिये गये हैं।
- 'स्', 'श्' और 'ष्' ये क्रमशः 'दन्त्य', 'तालव्य' और 'मूर्धन्य' वर्ण हैं। इनके उच्चारण उसी तरह करें जिस तरह उनके समान वर्ग के वर्णों का किया जाता है।

  # ध्यान रहे जिस वर्ण का जो स्थान है उसी स्थान का उपयोग कर किया हुआ उच्चारण ही उचित है |

- **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**
  कण्ठ – अ, आ, क् वर्ग, ह्, विसर्ग(:)
- **इचुयशानां तालु**
  तालु – इ, ई, च् वर्ग, य्, श्
- **ऋटुरषाणां मूर्धा**
  मूर्धा – ऋ, ॠ, ट् वर्ग, र्, ष्
- **लृतुलसानां दन्ताः**
  दन्त – लृ, त् वर्ग, ल्, स्
- **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ**
  ओष्ठ – उ, ऊ, प् वर्ग, उपध्मानीय प*, फ*
- **ऐदैतोः कण्ठतालु**
  कण्ठ-तालु – ए, ऐ
- **ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**
  कण्ठ-ओष्ठ – ओ, औ
- **ञमङणनानां नासिका च**
  मुख-नासिका – ङ्, ञ्, ण्, न्, म्
- **वकारस्य दन्तोष्ठम्**
  दन्त-ओष्ठ – व्
- **जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**
  जिह्वामूल – जिह्वामूलीय क*, ख*
- **नासिकाऽनुस्वारस्य**
  नासिका – अनुस्वार(ं)

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन consent@learngeeta.com *पर हमें लिखें।*

अवग्रह –

- अवग्रह **'S'** केवल एक चिह्न है जो लुप्त हुये 'अकार(अ)' को सूचित करता है। इसका स्वतन्त्ररूप से कोई भी उच्चारण नहीं है। अवग्रह नित्य 'ए', 'ओ' अथवा 'आ' इन स्वरों के बाद ही आता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रयुक्त छन्द -

- छन्दों के अनेक प्रकार संस्कृत में हैं तथापि श्रीमद्भगवद्गीता में केवल दो ही प्रकार के 1) अनुष्टुप् 2) त्रिष्टुप् छंदों का उपयोग हुआ है। अनुष्टुप् में कुल 32 अक्षर होते हैं जिसमें प्रत्येक चरण में कुल 8 अक्षर होते हैं | त्रिष्टुप् में कुल 44 अक्षर होते हैं जिसमें प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं | इन 8 और 11 अक्षरों के बाद प्रत्येक चरण पर रुकने को ही छन्दःशास्त्र में **'यति'** कहा जाता है।
  # ध्यान रहे कि पूरी गीता में पांच स्थानों पर अपवादस्वरुप (11/1, 2/6, 2/29, 8/10, 15/3) किसी चरण में नियत अक्षरों से एक अक्षर न्यून या अधिक पाये जाते हैं।

हल् सकार(स्) से आरम्भ हुये शब्दों के उच्चारणविषयक नियम

- किसी भी शब्द का आरम्भ यदि हल् 'स्' (स्वर रहित) से हो रहा है तो याद रहे उससे पहले किसी भी स्वर का उच्चारण नहीं करना है। प्रायः **'स्थान'** की जगह लोग **'इस्थान'** बोल देते है जो की उचित नहीं है।

आघात के नियम का शेष विस्तार

- 'द्' और 'य' का संयोग 'द्य' है तथा 'द्', 'ध्' और 'य' इन तीन व्यञ्जनों का संयोग 'द्ध्य' है। प्रथम संयोग में केवल दो व्यञ्जन हैं तथा द्वितीय में तीन व्यञ्जन। दोनों संयोगों को संयुक्त वर्ण ही कहते हैं।
- आघात के नियम में हम संयुक्तवर्ण के प्रथम वर्ण को द्वित्व कर पढ़ते हैं। इस द्वित्व की प्रक्रिया में द्वित्व करने के पश्चात् यदि वह वर्ण वर्ग का दूसरा वर्ण है तो द्वित्व किये वर्णों में से पहला वर्ण उसके वर्ग के प्रथम वर्ण में परिवर्तित होता है और यदि वह चौथा है तो तीसरे में परिवर्तित होता है। यदि संयुक्त वर्ण का प्रथम वर्ण अपने वर्ग का प्रथम या तृतीय वर्ण है तो वह जैसे का तैसा रह जाता है, उसमें उसी वर्ण का द्वित्व होगा । उदाहरण –

  - अक्षर = अ क् षर > अ क् क् षर = अक्क्षर
  - व्याख्या = व्या ख् या > व्या ख् ख् या > व्या क् ख् या = व्याक्ख्या
  - विद्धि = वि द् धि > वि द् द् धि = विद्द्धि
  - युध्यति = यु ध् यति > यु ध् ध् यति > यु द् ध् यति = युद्ध्यति

- कुछ स्थानों पर स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी अपवाद नियम के कारण आघात नहीं दिये गये हैं जैसे एक ही वर्ण के दो बार आने से, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने से, रफार (उपर र्) या हकार आने पर आदि। जिन स्थानों पर आघात का चिह्न नहीं वहाँ बिना आघात के ही अभ्यास करें।

  # ध्यान रहे संयुक्त वर्ण में प्रथम वर्ण 'वर्गों के आरंभिक चार वर्णों से अतिरिक्त' होने पर संयुक्त वर्ण के प्रथम वर्ण का ही द्वित्व होता है।

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन consent@learngeeta.com *पर हमें लिखें।*

सन्धि-नियम

दो वर्णों के एकसाथ आने पर सन्धि होती है। यदि एकसाथ आने वाले वर्ण स्वर हैं तो वह सन्धि स्वरसन्धि, कोई एक व्यञ्जन है तो व्यञ्जन सन्धि, अनुस्वार के स्थान पर यदि परिवर्तन आता है तो अनुस्वार सन्धि एवं विसर्ग के स्थान पर यदि परिवर्तन आता है तो विसर्ग सन्धि कहते हैं | सन्धि होने पर एकसाथ आने वाले वर्णों में से किसी एक या कई बार दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है। वह परिवर्तन क्या है और कैसे होता है यह हम इन नियमों में जानेंगे।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि विसर्ग से पूर्व और पश्चात् विद्यमान वर्णों के आधार पर होती है। अतः विसर्ग के विषय में जितने भी परिवर्तन होते हैं उनमें पूर्व और उत्तरवर्ती वर्णों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1. यदि विसर्ग का पूर्ववर्ण **'अ'** है और उत्तरवर्ती वर्ण **'अ'** या कोई भी **मृदु वर्ण** (ग,घ,ज,झ,ड,ढ,द,ध,ब,भ,य,र,ल,व,ह,सभी अनुनासिक) है तो विसर्ग और उसके पूर्ववर्ण में परिवर्तन होकर उन दोनों के स्थान पर **'ओ'** आदेश हो जाता है।
   # ध्यान रहे कि विसर्ग का उत्तरवर्ती वर्ण 'अ' है तो विसर्ग और उसके पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर 'ओकार' करने के पश्चात उस उत्तरवर्ती अकार का 'अवग्रह' (ऽ) में परिवर्तन होता है। अर्थात् वह लुप्त हो जाता है और उसके स्थान पर अवग्रह आता है।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
अ	:	अ/मृदुव्यञ्जन	ओ/ओऽ	**दर्प:+अभिमानश्च = दर्पोऽभिमानश्च** (16/4) **चेत्सुदुराचार:+भजते = चेत्सुदुराचारो भजते**(9/30)

2. यदि विसर्ग के पूर्व में **'अ'** स्वर है और उत्तर में **अकार व्यतिरिक्त** कोई भी स्वर है तो उस **विसर्ग का लोप** हो जाता है।
   # ध्यान रहे यह नियम अव्ययों के विषय में कार्य नहीं करता। इसके हेतु 5वाँ नियम देखें |

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
अ	:	अकारभिन्न स्वर	लोप	**मन:+आधत्स्व = मन आधत्स्व** (12/8)

3. यदि विसर्ग के पूर्व में **'आ'** स्वर है और उत्तर में **कोई भी स्वर** अथवा **मृदु व्यञ्जन** है तो विसर्ग का लोप हो जाता है। (कुछ परम्पराओं में इस नियम से किया हुवा विसर्ग का लोप यदि यति के जगह पर आता है तो उसका उच्चारण किया जाता है।)
   # ध्यान रहे ऊपर निर्दिष्ट किये गये दोनों नियमों से हुये विसर्ग के लोप के बाद अवशिष्ट स्वरों में कोई भी स्वर सन्धि नहीं होती है।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
आ	:	कोई भी स्वर/मृदुव्यञ्जन	लोप	**माययापहृतज्ञाना:+आसुरम् = माययापहृतज्ञाना आसुरम्**(7/15)

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन consent@learngeeta.com *पर हमें लिखें।*

4. यदि विसर्ग के पूर्व में **'अ'** और **'आ' व्यतिरिक्त** स्वर है और उत्तर में **कोई भी स्वर** आता है या कोई भी **मृदु व्यञ्जन** आता है तो विसर्ग **'र्'** मे परिवर्तित होता है। इस तरह से आया हुवा विसर्ग उसके उत्तरवर्ती स्वर में मिल जाता है और यदि व्यञ्जन है तो उस व्यञ्जन के ऊपर रेफ की मात्रा दर्शायी जाती है।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
'अ'/'आ' व्यतिरिक्त स्वर	:	कोई भी स्वर/मृदुव्यञ्जन	र्	**दु: + निरीक्ष्यम् = दुर्निरीक्ष्यम्** (11/17)

5. **अव्यय में स्थित** विसर्ग के पूर्व में चाहे **कोई भी स्वर** हो और यदि उसके पश्चात् **कोई भी स्वर** अथवा **रेफ भिन्न मृदु वर्ण** आता है तो विसर्ग का **'र्'** ही बनता है।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
कोई भी स्वर	:	कोई भी स्वर/मृदुव्यञ्जन	र्	**पुन: + जन्म = पुनर्जन्म** (8/16)

6. विसर्गके पूर्व में **कोई भी स्वर** और उत्तर में **'च्'** अथवा **'छ'** वर्ण आते हैं तो विसर्ग **'श्'** में परिवर्तित होता है | **'ट्'** या **'ठ्'** वर्ण आने पर **'ष्'** में और **'त्'** या **'थ्'** वर्ण आने पर **'स्'** में परिवर्तित होता है।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
कोई भी स्वर	:	च् / छ्	श्	**योगिन: + चैनम् = योगिनश्चैनम्** (15/11)
		ट् / ठ्	ष्	**धनु: + टङ्कार = धनुष्टङ्कार**
		त् / थ्	स्	**हन्यु: + तन्मे = हन्युस्तन्मे** (1/46)

7. यदि विसर्ग के पश्चात् **'क्'** अथवा **'ख्'** यह वर्ण आते हैं, तो उस विसर्ग का उच्चारण कुछ **'ख्'** की तरह करना है।

 # ध्यान रहे उच्चारण 'ख्' की तरह करना है 'ख्' नहीं।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
कोई भी स्वर	:	क् / ख्	ख् की ध्वनि	**मैत्र: + करुण - मैत्र:(ख्) करुण** (12/13)

8. यदि विसर्ग के पश्चात् **'प्'** अथवा **'फ्'** यह वर्ण आते हैं, तो उस विसर्ग का उच्चारण कुछ **'फ्'** की तरह करना है।
#ध्यान रहे उच्चारण 'फ्' की तरह करना है 'फ्' नहीं।

पूर्ववर्ण	विसर्ग	उत्तरवर्ण	विसर्ग का परिवर्तित रूप	उदाहरण
कोई भी स्वर	:	प् / फ्	फ् की ध्वनि	**तत: + पदम् = तत:(फ्) पदम्** (15/4)

|| इति ||

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन **consent@learngeeta.com** *पर हमें लिखें।*